my first sitār booklet from 1943.

krishnarao shankar pandit of gwālior

from

sangit karyālaya

hathras

1953

(fragments)

'शंकर गांधर्व विद्यालय' ग्वालियर की क्रमिक पुस्तकें.

नंबर — नाम पुस्तक.

गायन की पुस्तकें.

		रुपये. आ.
१.	संगीत सरगम सार	०—८
२.	संगीत प्रवेश भाग १ ला	Rs. 3-00 (१—०)
३.	संगीत आलाप संचारी	१—८
४.	संगीत प्रवेश भाग २ रा	२—०
५.	संगीत मिश्र संचारी	०—०

वादन की पुस्तकें.

१.	हॉर्मोनियम शिक्षा भाग १ ला	०—८
२.	,, ,, २ रा	Rs 1-25 (०—१२)
३.	सितार और जलतरंग शिक्षा भाग १ ला....	Rs 1-50 (०—१२)
४.	,, ,, ,, २ रा....	०—०
५.	तबला वादन शिक्षा भाग १ ला	Rs 1-50 (०—१२)
६.	,, ,, ,, २ रा	०—०

पोस्टेज अलग. मॅनेजर,

"शंकर गांधर्व विद्यालय,"

हुजरातपायगा रोड लश्कर (ग्वालियर स्टेट.)

नोट.—जिन पुस्तकों पर मूल्य नहीं है वह पुस्तक स्टाक में नहीं है.

॥ साम वेदाय नमः ॥

शंकर गांधर्व विद्यालय की क्रमिक पुस्तक

सितार व जलतरंग.

भाग पहिला.

कृष्णराव शंकर पंडित,
'गायन विशारद' व 'गायक शिरोमणि' प्रिन्सिपॉल.
शंकर गांधर्व विद्यालय ग्वालियर

द्वारा रचित १९४३ ई०.

द्वितीयआवृत्ति} सर्व हक्क स्वाधीन {की. Rs 1-50 १२ आना.

आलीजाह दरबार प्रेस, ग्वालियर.

पुस्तक मिलने का पता :—
संगीत कार्यालय
हाथरस (उ० प्र०)

गायन व वादनाचार्य.

तिर्थस्वरूप एकनाथ विष्णू पंडितजी, जिन्होंने आजन्म गायन व वादन विद्या प्राप्त करने व उसका प्रचार करने में अविश्रांत श्रम किये, जिनकी कीर्ति अखिल भारतवर्ष में गूंज रही है उनकी सेवा में यह अल्प प्रयत्न जो यथा मति मैंने इस विद्या के प्रचार हेतू किया है नम्रता पूर्वक अर्पण करता हूं.

नम्र सेवक—कृष्णराव पंडित.

ग्रंथकर्ता,

गायक शिरोमणि व गायन विशारद कृष्णराव शंकर पंडित
प्रिन्सिपॉल, शंकर गांधर्व विद्यालय ग्वालियर.

विषय सूची.

विषय.		पृष्ठ संख्या.
१.	अभिप्राय	१—२
२.	भूमिका	३—५
३.	नोटेशन चिन्ह	६
४.	सितार व जलतरंग चित्र	७—८
५.	सितार वादन का पारिभाषिक कोष	९—११
६.	तंतु वाद्यों की विषय सूची	१२
७.	सितार का वर्णन	१३
८.	तार का मिलाना	१४
९.	सितार के पडदे व आसन	१५–१६
१०.	बारा ठाटों का प्राचीन आर्वाचीन नाम का कोष्टक	१७
११.	सितार के बोल व ताल विचार	१८
१२.	जलतरंग उसकी रचना व बजाने की मालूमात	१९–२०
१३.	स्वर मालिका	२१–२४
१४.	राग यमन की गत व तोडे	२५–२६
१५.	राग भूपाली ,, ,,	२७–२८
१६.	,, केदारे की गत व तोडे	२९–३०
१७.	,, हमीर की गत व तोडे	३१–३२
१८.	,, बिहाग की गत व तोडे	३३–३४
१९.	,, खमाज की गत व तोडे	३४–३६
२०.	,, देस की गत व तोडे	३६–३७
२१.	,, सारंग की गत व तोडे	३८–३९
२२.	,, कॉफी की गत व तोडे	४०–४१
२३.	,, बागेसरी की गत व तोडे	४२–४३
२४.	,, भीमपलासी की गत व तोडे	४४–४५
२५.	,, असावरी की गत व तोडे	४६–४७
२६.	,, कानडा की गत व तोडे	४८–४९
२७.	,, भैरव की गत व तोडे	५०–५१
२८.	,, भैरवी की गत व तोडे	५२–५४

हमारे पुस्तकों के सम्बन्धी कुछ अभिप्राय

पंडित कृष्णरावजीने प्राचीन संगीत सिस्टिम के अनुसार संगीत की पहिली पुस्तक सरगमसार जिसमें तीस रागों की सरगमें और दुसरी पुस्तक संगीत प्रवेश व तीसरी पुस्तक आलापसंचारी व हारमोनियम शिक्षा के दो भाग और सितार वादन की यह लिखी हुई है पुस्तकें मैंने अच्छी तरह से जांचकर देखीं मेरी दृष्टि से यह पुस्तकें बहुत सुलभ नोटेशन में होकर विद्यार्थियों को बहुत सरल लाभदायक व अच्छी मालूमात के लीये हैं. हमको उम्मेद है कि आप ऐसेही प्रयत्न करते रहेंगे और अपने ज्ञान और अनुभव का गायन प्रेमीजनों को लाभ देते रहकर संगीत ग्रंथ भांडार की वृद्धि करते रहेंगे.

ता. ७ नवम्बर सन १९३३ ई०,
संवत १५८९.

एकनाथ विष्णू पंडित,
गायन व वादनाचार्य,
ग्वालियर.

हमारे प्रिय गुरुबन्धु 'गायन विशारद, कृष्णराव पंडित प्रिं. शंकर गांधर्व विद्यालय ग्वालियर ने सितार की प्रथम पुस्तक मेरे तरफ भेजी मैंने उसका निरीक्षण किया. इस पुस्तक से सितार व जलतरंग इन दोनों विषयों के लिये जितनी मालूमात चाहिये वह पूर्ण है. यह प्राथमिक शिक्षण के लिये अमोल्य है. पंडितजी के इस परिश्रम का मैं मनःपूर्वक अभिनन्दन करके विद्यार्थियों के लिये उचित समझता हूं कि वह परिश्रम व ध्यानपूर्वक अभ्यास करने से तन्तुवाद्योंकी पूर्ण मालूमात होगी ऐसी मेरी पूर्ण खात्री है. विद्यार्थी इससे अवश्य लाभ लेकर सितार का ज्ञान संपादन करेंगे ऐसी मैं शिफारिश करता हूं और पंडितजी सरीखे संगीत तज्ञों के हाथ से और भी संगीत मार्ग दर्शक पुस्तकें तयार होकररलुप्तप्राय हुवे इस विद्या को पुनरुज्जीवन हो ऐसी मैं श्रीजगच्चालक प्रभुजी से प्रार्थना करता हूं.

ता. २४-११-३३ ई०,
लश्कर.

आपका,
वे. शा. संपन्न श्रीपादबोवा मसूरकर हरिदास.

भूमिका

सितार नामक तन्तु वाद्य को अमीर खुसरो नामी एक फकीर ने निकाला और प्रथम इस पर तीन तार चढाये इसी कारण इसका नाम 'सहतार' रखा गया फारसी में 'सह' नाम तीन का है.

सितार वाद्य के लिये दीर्घ काल से दो सूत्रकारों की दो प्रथायें प्रचलित हैं. एक मसीतखानी बाज, और दूसरा पूरब बाज, मसीतखानी बाज मसीदखां के नाम से प्रसिद्ध है. मसीतखांजी अमृतसेनजी के दादा लगते थे, पूरब बाज पूर्व में रहनेवाले तानसेन वंशधर उस्ताद ने निकाला है इसलिये उसे पूरब बाज कहते हैं पूरबबाज में मसीतखानी बाज के बराबर गंभीरता नहीं है इसमें मध्य और द्रुत लय का प्राधान्य है. मसीदखानी बाज में रागदारी बिलम्पत और मध्य लय का प्राधान्य है.

मसीदखांजी के वंशज में बहादरसेन व अमृतसेनजी, जयपुर में सितार वाद्य के अद्वितीय उस्ताद राजा रामसिंगजी के जमाने में हो गये हैं इनकी भगिनी हैदरबक्षजी के जेष्ठ पुत्र वजीरखांजी को ब्याही थी उससे अमीरखांजी और निहालसेनजी यह दो पुत्र हुवे दोनों पर अमृतसेनजी का प्रेम था उन्होंने ही दोनों को सितार सिखाया उनमें से अमीरखांजी इस विद्या में प्रधान हुवे और प्रथम वह जयपुर में राजा रामसिंगजी के पास नौकर रहे फिर ग्वालियर में कै. श्रीजयाजीराव महाराज के यहां नौकर हुवे और बहुत कृपापात्र हुवे जिन्होंने स्वर्गवासीमाधव महाराज को भी दीक्षा दी थी इनके दो पुत्र फिदाहुसेन और फजलहुसेन हुवे दोनों सितार में प्रवीण थे छोटे फजलहुसेन अल्पायुषी हुवे. फिदाहुसेन यह जयपुर दरबार में नौकर हैं. और जयपुर दरबार की अवर्णनीय ख्यात यह है कि जो दरबार में एक दफा नौकर हुवा उसके कोई भी खानदान में होने तक उसीको नौकरी मिलेगी. फिदाहुसेन के लडके नवाबखांजी कुछ समय माधव संगीत विद्या-

लय में सितार के शिक्षक हुवे थे अमीरखांजी के पट्टशिष्य बे. शा. सं. श्रीपादबोवा उस वक्त ग्वालियर में सितार बहुतही अच्छा बजाते थे.

ग्वालियर में बाबूखांजी भी पूरबबाज बजाने में बहुत उस्ताद हो गयेहैं उनके लडके महमदखांजी अभी राजकुमारी कै. श्री. कमलाराजा साहब को तालीम देते थे. श्रीयुत एकनाथ पंडितजी ने बाबूखांजी से शिक्षा पाई है और बन्देअलीखां व मुशरफखां प्रसिद्ध बीनकारजी का भी सहवास किया है. आप पूना गायन समाज में ६ वर्ष प्रोफेसर थे. इंग्लैण्ड के प्रसिद्ध हिन्दुस्तान के म्यूझिक केसंशोधक मि. फॉक साहब ने अपनी हिन्दुस्तानी म्यूझिशियन में आपका सचित्र वर्णन दिया है. और मार्च सन १९२५ ई० माडर्न रिव्यू में आपकी सचित्र प्रशंसा निकल चुकी है इसके अतिरिक्त आपको म्हैसूर दरबार व प्रो० भातखण्डे आदि अनेक सज्जनों से सार्टिफिकेट प्राप्त हैं. आप सितार वाद्य के एकही वादनकार इस समय ग्वालियर में हैं जिनको कौन नहीं जानता आपके गायन व वादन कला के कई शिष्य हैं, भैया साहेब मावळणकरजी शिक्षक माधव संगीत विद्यालय भी आपके ही शिष्य हैं.

उज्जैन में सरदार नाना साहेब अष्टेवाले सितार वाद्य में अद्वितीय हो गये हैं उनके सुपुत्र छोटुभैया साहब अष्टेवाले आलाप और तानों में इस समय बहुत अच्छे प्रवीण हैं.

म्हैसूर में बर्कतुल्लाखांजी बहुत नामी हो गये हैं. इम्दादखांजी इन्दौर में अच्छे प्रवीण हो गये हैं उनके लडके इनायतखांजी अभी गोरीपुर स्टेट में अच्छे प्रविण थे.

इन गुणीजनों के उल्लेख इसलिये किये गये हैं कि वह इस विद्या के भरतखंड में आचार्य हो गये हैं जिनका परिचय देना आवश्य है.

यह पुस्तक मैंने गुणीजनों के हितार्थ बहुत परिश्रम पूर्वक मेरे पूज्य पितृ-भ्राता एकनाथ पंडितजी की आज्ञा से लिखी है जिसमें पंधरा रागों की गतें, तोडे आलाप, आदि दिये हैं और सितार का सचित्र वर्णन, ठाटों के बारा प्रकार, उनके मिलाने के नियम, पडदों की रचना, बोल, संकेत इत्यादि को बहुत स्पष्ट कर दिया है.

इस पुस्तक में जलतरंग वाद्य का चित्र और वर्णन व वादन की क्रियायें विशेष रूप से दी गई हैं जिसका ध्यानपूर्वक अभ्यास करने से सुलभता से हो सकती है. ऐसी यह एक पंथ दो काज की किताब है.

इस पुस्तक के लिये बहुत से अभिप्राय पुस्तक छापने के पूर्व ही लिये गये हैं परंतु आत्म प्रशंसा से मुझे बडा दुःख होता है अतएव इस के सम्बन्ध में विशेष लिखना नहीं चाहता इसलिये केवल दो ही अभिप्राय यहां दिये हैं.

गुणीजन पुस्तक का हंसक्षीर न्याय से निरीक्षण करेंगे और भूल चूक सुधारने के लिये मुझे सूचित करेंगे जिसका द्वितीय मुद्रण के समय में अवश्य विचार करूंगा.

इस पुस्तक का भार रा. मुकुन्दराव दण्डवतेजी ने पुस्तक लिखने व मालूमात इकट्ठा करने में हाथ बटाया है जिसके लिये उनका भी विस्मरण हमको कदापि न होगा.

शंकर गांधर्व विद्यालय,
वसंत पंचमी संवत १९८९,
लश्कर-ग्वालियर.

आपका,
कृष्णराव शंकर पंडित.

परमदयालु ईश्वर कृपासे सितार वादन शिक्षा की प्रथमावृत्ति सन १९३३ ई० में हुई थी अब द्वितीय आवृत्ति प्रकाशित करने का सौभाग्य सन १९४३ ई० में हुवा है इस आवृत्ति में सुधार कर के की गई है.

चंपाशष्ठी संवत २०००,
ता: ३ दिसंबर सन १९४३

आपका,
कृष्णराव शंकर पंडित.
दरबार गायक ग्वालियर.

नोटेशन चिन्ह.

१. जिन स्वरों के नीचे — यह चिन्ह हो उन्हे मंद्र सप्तक का स्वर समझना चाहिये जैसे म प

२. जिन स्वरों पर कुछ चिन्ह न हो उन्हे मध्य सप्तक का स्वर समझना चाहिये जैसे ग प

३. जिन स्वरों के ऊपर — यह चिन्ह हो उन्हें तार सप्तक का स्वर समझना चाहिये जैसे सां गं

४. कोमल स्वर के लिये नीचे चिन्ह दिये गये हैं जैसे–रे ग ध नि.

५. तीव्र स्वर के लिये स्वर के नीचे चिन्ह दिया है जैसे—म्

६. जिन स्वरों के आगे ऽ चिन्ह हो वह स्वर एक मात्रा काल तक बढाया जावे. और जिन अक्षरों के आगे ० यह चिन्ह हो वहां भी एक मात्रा ठहरना चाहिये. एक से अधिक जितने ऐसे चिन्ह होंगे उतनेही काल तक वह स्वर या अक्षर बढाया जावे.

ताल संकेत.

७. १ ला ताल. २. रा ताल. ३. रा ताल. काल. ४ था ताल.

सां गँ मँ पं गं

८. जिन स्वरों के नीचे एक द्वितीयांश $\frac{1}{2}$ हो वह आधे मात्रा में बजाना चाहिये जहां एक तृतीयांश $\frac{1}{3}$ हो, उसको तिहाई मात्रा में बजाना चाहिये और जिसमें एक चतुर्थांश $\frac{1}{4}$ हो उसको पाव मात्रा में बजाना चाहिये जहां ध प दो स्वर हों वहां पहिला स्वर पहिले उच्चार कर बाद दुसरा स्वर बजाना चाहिये.

विद्यार्थी व संगीत के प्रेमी सज्जनों को पुस्तक के आरंभ करते समयनोटेशन संकेत को अवश्य पूर्ण समझ लेना चाहिये जिससे इस विषय के समझने में बहुत सुगमता प्राप्त होगी.

सितार का चित्र.

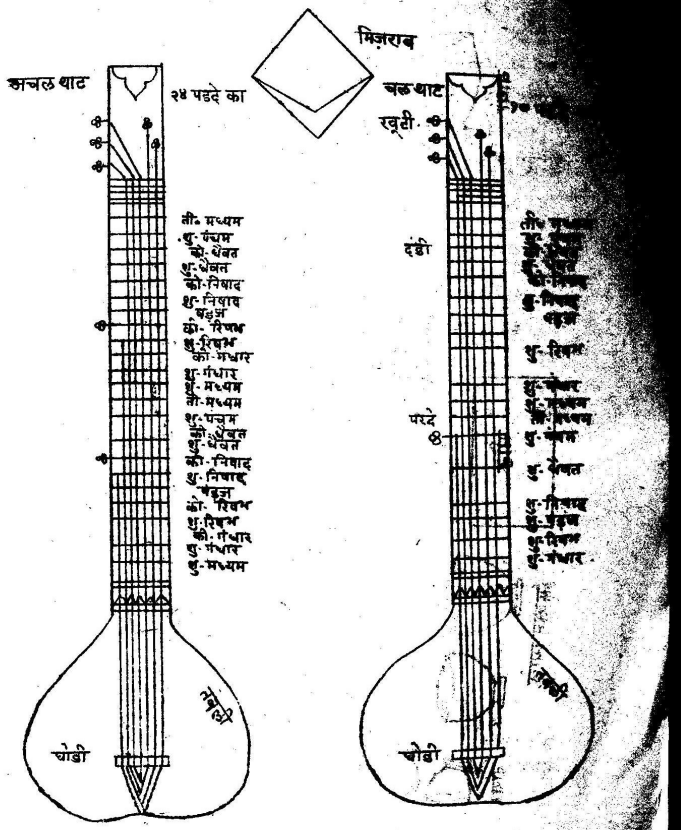

पडदे---सितार के डन्डी पर जो लोहे की अथवा पीतल की पट्टियां रहती हैं उनको पडदे कहते हैं.

पपैया---सितार पर जो पोलाद की छटीं और सातवी तार रहती है उसे पपैया की तार कहते हैं.

जोड काम---सितार, बीन आदि तन्तु वाद्यों में मींड या अलापदारी के काम करने को जोड का काम कहते हैं.

डाट---राग में ऊंचे स्वर से नीचे स्वर तक बीच के श्रुती के ध्वनी के सहित मींड के तरफ आने को डाट कहते हैं.

तत्---पोलाद, पीतल या तांबे की तार, रेशम, तात आदि साधनों से बजाये जाने वाले वाद्यों को तत् जाति के वाद्य कहते हैं.

तुरप या सुलप---स्वर के अवरोह स्वर एक में दूसरे को मिश्र करने को तुरप, सुलप कहते हैं.

आंस---सितार मिलाते वक्त तार के बजाते ही जो आवाज निकलती है उस पर खास ध्यान न देते उसके बाद जो आवाज निकलता है उसे आंस कहते हैं.

मींड---एक स्वर से दूसरे स्वर तक खंड न होते बीच के स्वरों को घसीटते हुए जाने को मींड कहते हैं. उसके भी अनेक प्रकार हैं याने लचक की, सूत की, कतर की, सादी, आस की इत्यादि.

खटका---कोई भी स्वर बजाते हुवे उसके आगे के या पीछे के स्वर को झटका देकर उससे मिश्र स्वर पैदा करने को खटका या झमझमा कहते हैं.

घसीट---किसी भी स्वर से उंगली तार पर से तेजी से घसीटते हुवे बीच में खंड न पडते हुवे इच्छितस्वर तक लेजाने को घसीट कहते हैं.

गमक---राग के स्वरूपानुसार स्वरों का भिन्न भिन्न प्रकार का [illegible] उच्चार किया जाता है उसे गमक कहते हैं गमक से संगीत अधिक मधुर व खूबीदार होता है.

गत---प्रत्येक राग की बंधी हुई सरगम को सितार वादन में गत कहते हैं और गाने में अस्ताई कहते हैं.

अंत्रा---गाने में दूसरे हिस्से को अंत्रा कहते हैं. सितार वादन के दूसरे हिस्से को भी अंत्रा कहकर बजाते हैं.

झाला---कानों में मीठे लगनेवाले बोल एकाधे स्वर के साथ बजाते रहने को झाला कहते हैं.

लड---एकही टुकडे को बार बार दुहराते रहने को लड कहते हैं.

लय---गाना या बजाना जिस काल में आरंभ किया हो वह काल वह गाना वादन पूर्ण होने तक कायम रखने को लय कहते हैं.

लाग---राग में नीचे के एक स्वर से ऊंचे स्वर तक उसके बीच के श्रुति के ध्वनि सहित मींड के साथ आने को लाग कहते हैं.

मात्रा---मनुष्य के नाडी के खटके के बीच के समय को साधारणतः मात्रा यह संज्ञा है.

रागधुन---जिस राग में चीज गाई बजाई जावे उस राग की छाया आकार में बतलाने को राग धुन कहते हैं.

मिजराब---सितार बजाने की अंगुश्ती में डालकर बजाई जाती है जिसका चित्र इस पुस्तक में दिया गया है. उसको मिजराब कहते हैं.

दूआ और तिया---गत के शुरू हिस्से को दुबारा बजाकर सम पर आने को दूआ कहते हैं. और तिबारा बजाकर सम पर मिलने को तिया कहते हैं.

तत और वितत जाति याने (तन्तु वाद्यों में) आनेवाले वाद्यों की सूची.

नम्बर.	वाद्यों का नाम.	नम्बर	वाद्यों का नाम.
१	असर वीणा.	१३	मोरचंग.
२	कानून (स्वर मंडल).	१४	सितार.
३	चिकारा.	१५	सरस्वती या रुद्रवीणा.
४	ताऊस.	१६	सरोद.
५	तानपुरा.	१७	सुरबीन.
६	तरफ साज.	१८	सुरसोटा.
७	दिलरुबा.	१९	सुर श्रृंगार.
८	दिलपसन्त.	२०	रुबाब.
९	पियानो.	२१	एकतारी.
१०	फिडिल.	२२	गिटार.
११	बीन.	२३	सारंगी.
१२	मँगोलिया.	२४	इसराज.

वाद्य चार प्रकार के हैं. याने—(१) तंत्, (२) वितत्, (३) घन, (४) शुषीर, इन चार प्रकार के वाद्यों में कुल वाद्यों का समावेश होता है.

ततं वीणादिकंवाद्य मानद्धंमुरजादिकम्।
वंशादिकंतु सुषिरंकास्यं तालादिकं घनम्॥

(१) तत् जाति के वाद्यों में, पोलाद, पीतल, तांबे की तार, रेशम, इत्यादि साधनों से बजाई जानेवाले वाद्यों का समावेश होता है. सितार तत् जाति का वाद्य है.

(२) वितत् जाति के वाद्य जोकि गज से बजाये जाते हैं.

(३) घन जाति के नगारा, ढोलक, तबला, मृदंगादि.

(४) सुषिर जाति के वाद्य हवा से याने फूंक से बजानेवाले.

सितार वर्णन.

बाजू के सफे पर सितार का चित्र दिया गया है उस चित्र से सितार का स्वरूप ध्यान में आवेगा तंतु वाद्यों में यह वाद्य बहुत कोमल और सीखने में सुलभ, करने से होता है.

इस वाद्य को छे या सात तार होते हैं. तारों की गिनती बाई तरफ से की जाती है. पहिली तार पोलाद की होकर उसको मध्यम अथवा बाज की तार कहते हैं. दूसरी और तीसरी पीतल की तार रहती है उसको जोड की तार कहते हैं. चौथी पोलाद की तार है उसको पंचम की तार कहते हैं. पांचवीं पीतल की तार है परन्तु जोड के तार से मोटी होती है उसको खर्ज पंचम की तार कहते हैं. छटी और सातवी तार पोलाद की बारीक तार होती है इसको पपैया या चिकारी की तार कहते हैं. और यह बहुत मीठी होती है.

तार को अटकाने के लिये खूंटियां डन्डी को छेद करके सामने और बगल में लगाई हुई होती हैं नीचे का हिस्सा गोल तुम्बे का बनाया हुवा होता है और

उसपर लकडी की तबली चढी रहती है इस तबली पर हाथी दांत की या लकड
की घोडी होती है जिसपर होकर तूम्बे के नीचे के हिस्से से शुरू होकर ता
खूंटियों में लगे रहते हैं.

सितार के डन्डी पर पीतल अथवा लोहे की पट्टियां रहती हैं उनको प
कहते हैं और तांत या डोरे से बांधे जाते हैं.

सितार दो प्रकार की होती है एक अचल ठाट की और दूसरी चल ठाट की
चित्र में पहिला चित्र चौबीस पर्दे के सितार का है, इसको अचल ठाट क
सितार कहते हैं. दूसरा चित्र सतरा पर्दों के सितार का है इनको चल ठाट क
सितार कहते हैं.

जिस सितार के पर्दे हर एक राग या गतों के बजाने के समय ऊपर नीचे
करने नहीं पडते उसको अचल ठाट की सितार कहते हैं और जिसके पर्दे ऊपर नीचे
करने पडते हैं उस सितार को चल ठाट की सितार कहते हैं. सोला या सतर
पर्देवाली सितार चल ठाट की होती है.

तार का मिलाना.

प्रथम सितार की दूसरी व तीसरी तार, एक स्वर में कायम कर लेना चाहिये
इसके बाद पहिली तार यह मध्यम की तार होती है इसलिये दूसरे व तीसरे ता
के आवाज को षड्ज मानकर उसके मध्यम में मिलाना चाहिये चौथा तार दूस
तीसरे के पंचम में मिलाया जाता है जब तार की आवाज और गले की आवा
एक हो जावे तब पांचवां तार जो खर्ज का होता है पंचम तार के स्वर में हलके
स्वर में यानी न तो टीप की सप्तक न उसी सप्तक पर उससे हलकी यानी मं
सप्तक के उसी स्वर में मिलावे ताकि आवाज लहराती हुई सुनाई देवे. छट
चिकारी की तार जोड के स्वर में मिलाई जाती है. सातवीं तार टीप की षड्
में जहां एकही चिकारी की तार होती है वहां पर टीप के षड्ज में मिलाई जात

है. इन सब तारों के मिलाने के बाद पहिला बाज का तार जोड के तारों के
षड्ज के मध्यम में मिलाया जाता है.

सितार के पडदे.

सितार के तार के मुताबिक सितार के पडदे भी हर एक राग के गतों के
बजाते समय ऊपर नीचे हटाये जाते हैं जिस राग में सब शुद्ध स्वर होते हैं ऐसे
रागों की गत बजाते समय पडदे हटाने की जरूरत नहीं है, मगर जिसमें कोमल
स्वर होते हैं ऐसे राग की गत बजाते समय पडदे ऊपर नीचे हटाने की जरूरत
पडती है, याने ठाट बदलना पडता है. चौवीस पडदे के सितार में ठाट बदलने
की जरूरत नहीं होती क्योंकि वह अचल ठाट की होती है, रिषभ, गंधार, धैवत
यह कोमल होते हैं अगर किसी राग में कुछ स्वर कोमल हों तो उस स्वर के पडदे
को ऊपर सरकाना चाहिये उसका यह कायदा है कि जिस स्वर का पडदा कोमल
करना हो वह पडदा उसके असली जगह से उसके पिछले स्वर के पडदे तक जो
जगह होगी उसके आधे तक ऊपर सरकाना चाहिये ताकि स्वर कोमल हो
जावेगा.

सितार बजाने का आसन.

सितार बजाते वक्त आलथी पालथी मारकर बैठना चाहिये अपने बायें
हाथ की और सितार के खूंटियोंवाला भाग रहना चाहिये और दाहिनी तरफ
घोडीवाला भाग रहे. सितार जमीन पर रखकर तार मिलाना चाहिये और
फिर सितार उठावे. व दाहिनी गोडे की आश्रय से तकिया हाथ की कोनी से
तुम्बे को दबाना चाहिये.

दाहिने हाथ के अंगूठे के पासवाली उंगली में मिजराब पहिनी जाती
मिजराब का तार नाखून के ठीक मध्य पर से पास होता रहे.

दाहिने हाथ का अंगूठा सबसे नीचे के पडदे के पास जमाना चाहिये और
फिर मिजराब पहिने हुवे उंगली से सितार बजाना चाहिये. पहिले चोट बाज
के तार पर पडना चाहिये उसके बाद बाकायदा दूसरे तीसरे ऐसेही सब तारों
पर उधर बायां हाथ सितार के डन्डी को किसी कदर थामता है और तार चढे
हुवे भाग पर पडदे पर बायें हाथ की उंगली रखी जाती है दाहिने और बायें हाथ
के मेल से यानी साथ साथ काम करने से जिस पडदे पर उंगली रखी हो उस स्वर
का वह बोल निकलता है जो दाहिने हाथ की उंगली से बजाया जावे.

ठाट.

सितार बजानेवाले स्वर समुदाय को ठाट कहते हैं इस ठाट पर से स्वरों का
निर्देश करने में बडी सुभीता होती है. यह ठाट अनेक प्रकार के हैं.

जो राग संपूर्ण है और उनके आरोह में जो स्वर कोमल अथवा तीव्र हैं वह
उसके अवरोही में हो, ऐसे स्वर समुदाय को ठाट कहते हैं सर्व साधारण सब राग
बाराही ठाटों से सिद्ध हो सकते हैं. इसलिये मुख्य बारा ठाट माने गये हैं. का
सज्जन दस ठाटों में ही मानते हैं. मगर उसमें त्रुटी रहती है.

आजकाल के कई ग्रंथकार, गायन में भी ठाट शब्द का प्रयोग करते
वस्तुतः ठाट शब्द का प्रयोग सितार हार्मोनियम, इत्यादि वाद्यों के तरफ
करना उचित है ठाट शब्द का अर्थ ठहरी हुई मानी हुई स्वर रचना अथवा पद्ध
की स्थापना से है.

बारा ठाटों के प्राचीन और आर्वाचीन नाम और उनके कोमल तीव्र स्वरों का कोष्टक नीचे दिया जाता है.

क्रमांक.	प्राचीन काल के नाम.	इस वक्त जो नाम प्रचार में है.	स्वर.
१	मेचकल्याणी ..	यमन.	सा रे ग म् प ध नि सां.
२	शंकराभरण ..	बिलावल.	सा रे ग म प ध नि सां.
३	हीरकामोदी ..	खमाज.	सा रे ग म प ध नि॒ सां.
४	खरहरप्रिया ..	कॉफी.	सा रे ग॒ म प ध नि॒ सां.
५	नटभैरवी ..	आसावरी.	सा रे ग॒ म प ध॒ नि॒ सां.
६	हमनतोडी ..	भैरवी.	सा रे॒ ग॒ म प ध॒ नि॒ सां.
७	शुभापंथवराळी	तोडी.	सा रे॒ ग॒ म् प ध॒ नि सां.
८	मायामालवगोळ	भैरव.	सा रे॒ ग म प ध॒ नि सां.
९	कामवर्धनी ..	पूर्वी.	सा रे॒ ग म् प ध॒ नि सां.
१०	मारवा ..	मारवा.	सा रे॒ ग म् ध नि सां.
११	कीरवाणी ..	पीलू.	सा रे ग॒ म प ध॒ नि सां.
१२	सूर्यकान्ता ..	ललित.	सा रे॒ ग म म् ध नि सां.

सितार के बोल.

सितार के बोल दिड व दाड ये दो अक्षरों में हैं (१) दा व (२) डा.

दा---यह बोल बजाते वक्त सितार के तार पर से उंगली अपने तरफ लाय

डा---यह बोल बजाते समय उसको उल्टी फिरावो. दिड दा के समान व डडा के समान ही दाड ह्रस्व बजाये जाते हैं. यह दोनों अक्षर मात्राओं प्रमाण से ह्रस्व दीर्घ होते हैं. जैसे दादीडदाडा, इसमें दिड ह्रस्व है और दा दीर्घ है. कहीं कहीं डा के बजाय रा का भी उपयोग करते हैं.

ताल विचार.

गत किसी न किसी ताल में बंधी रहती है. सितार की गतें विशेषकर धी तिताले में है दिड दा दादिड दाडा इस क्रम की गतों का धीमे तिताले की सोल मात्रा से आरंभ करना चाहिये बोलों के क्रम का कुछ नियम नहीं है अनेक प्रका के बोल क्रम से देखने में आते हैं. तालमे सम ही प्रधान होती है. ताल में स किस बोल पर होती है इसका नियम नहीं है. तथापि गत में यदी 'दिड दा दि दाडा' इस क्रम से बोल हों तो प्रायः इनके आगे के बोल पर सम रहती है ज अनेक बोलों पर सम हो सकती हो वहां सम योग्य बोल पर सम की कल्प करनी चाहिये. बोल की प्रधानता स्वर की प्रधानता से जाननी चाहिये. त्रिता के सिवाय बजानेवाले चौताला, आडा चौताला वगेरे किभी गतें कैसे बजाते हैं दूसरे भाग में दीया जावेगा.

सितारके जोड, बगैर ताल के बजते हैं, क्योंकि जोड का प्रथम ध्येय रा के स्वरूप को दिखाना है गानें में आलाप गत-तोडा, फिक्रे सब ताल के सा बजते हैं. फिक्रे गत की दुगन लय में प्रायः बजते है. सितार में गतें दो प्रकार बजती है एक पूरब बाज के अंग की गतें तेज लय से बजती हैं और बोल बहुतकर खडे होते हैं. दूसरे मसीदखानी, धीमी लय से बजती है और इसमें र का पूर्ण स्वरूप दरसाया जा सकता है. और सितार के अन्य नखरे मींड, गम बगैरा अच्छी तरह अदा किये जा सकते हैं.

जलतरंग का वर्णन और उसकी रचना.

जलतरंग यह वाद्य घन जातीय याने (झन्कार) से बजनेवाला वाद्य है जिस वाद्य में चमडे का या तार का संसर्ग न होकर हाथों के आघात से या किसी दूसरे प्रकार से एक दूसरे पर आघात होने से जो आवाजनिकलता है वह घन जातीय वाद्य कहलाते हैं.

जलतरंग के चीनी मिट्टी के प्याले उपयोग में लाये जाते हैं और वह बडे से छोटे तक एक से दूसरा छोटा इस प्रकार से फर्कवाला होता है. यह बांस के दो किमडियों से बजाये जाते हैं. किमडियों की लम्बाई एक फुट से प्रायः डेढ फुट तक रहती है और मोटाई बरू के कलम की समान होती है.

प्यालों की रचना.

प्यालों की रचना नक्शें में बताये हुवे मुताबिक करना चाहिये यानी अपने बांयें तरफ से बडे प्यालों की रचना करते हुये अपने दाहिनी तरफ एक के बाद दूसरा छोटा इस तरह प्याले की रचना होनी चाहिये और फिर वह प्याले पानी से भरना चाहिये, प्यालों में पानी इस अन्दाज से डालना चाहिये कि उनपर किमडी का आघात करने में एकसे दूसरे की आवाज चढी उतरी रहे और फिर हार-मोनियम वाद्य के स्वरों से उसको मिला लेना चाहिये. प्यालों में पानी डालने से प्याले का स्वर नीचा हो जाता है और पानी निकालने से स्वर उंचा हो जाता है. प्याले मिलाने का काम बुद्धिमत्ता का है और उसके लिये प्रथम स्वर ज्ञान होना आवश्यक है.

बडे प्याले मन्द्र सप्तक के पंचम स्वर से शुरू करके तार सप्तक के पंचम स्वर तक मिलाना चाहिये. जलतरंग के बोल वही होंगे जो सितार के हैं.

१३. ऊपर की सरगमों को "दिड दिड दिड दिड" बोल से भी बजावो.

१४. इन्ही सरगमों को "दिड दिड दाडा बोल से भी बजावो.

१५. इसके बाद एक से लगाकर दस तक प्रत्येक सरगमों को दुगन लय करके बजाना चाहिये. यानी वही सब [बो]ल उतने ही समय दो बार बजा लेना चाहिये.

१६. बजाई अनेक प्रकार की हो सकती है एक राग को बजाने के लिये वाद्य का एक एक स्वर चढतें जाना अस्ताई अंतरे का बजाना विलंबित, मध्य द्रुत, तीनों लय को क्रम से बजाना, फिर संकीर्ण करके बजाना, छोटी रागिनियों में अंतरे को मंद बजाकर अस्ताई को जोर से बजाना या एक सम बजाना इत्यादि इसको बजाई कहते हैं.

राग यमन.

यह सम्पूर्ण राग है इसमें मध्यम तीव्र लगता है व कभी अवरोह में शुद्ध मध्यम भी वक्र करके लगाया जाता है. इसका वादी स्वर गंधार और संवादी निषाद है. इसकी आरोही अवरोही इस प्रकार की है. इस राग को बजाने का समय रात्री पहिला प्रहर है. यह यमन कल्याण ठाट का मुख्य राग है.

सा रे ग म् प ध नि सां, सां नि ध प म् ग रे सा

सां नि ध प म् ग म ग रे सा.

गत (त्रिताल)

दां दा डा दि ड | दां दिड दा दि ड दा | डा दां दा डा दिड | दा
ग म् प नि नि ध प प म् ग ग म् | प नि ध प प प | रे

दि ड दा डा ||
ग ग म् ध प || धृ० ||

दां दि ड दा डा | दां दा डा दि ड | दां दि ड दा डा | दां दा डा
ग म् म् ध प | सां सां सां सां सां | ध नि नि रें गं | गं रें सां

दि ड | दां दि ड दा डा | दां दा डा दिड | दां दिड दा डा ||
सां सां | ध नि नि ग प | नि ध प प प | रे ग ग म् ध प ||१||

तोडे.

१. दा दा डा दि ड | दा दि ड दा डा ॥
सा ग रे ग ग | म प प ग रे ॥

२. दा दि ड दा डा | दा दा डा दि ड | दा दि ड दा डा ॥
म ग ग प प | नि ध प ध रे | सां नि नि ध प ॥

३. दा दि ड दा डा दा दि ड दा डा | दा दि ड दा डा
सा ग ग रे सा ग म म प प | नि ध ध प प
दा दि ड दा डा ॥
रे ग म ग रे ॥

४. दा दि ड दा डा दा दि ड दा डा | दा दि ड दा डा
ग रे रे सां नि रे सां सां नि ध | सां नि नि ध प
दा दि ड दा डा ॥
नि ध ध प म ॥

राग भूपाली.

इस राग में मध्यम, निषाद वर्ज और बाकी शुद्ध स्वर लगते हैं यह यमन थाट का राग है इस राग को बजाने का समय रात्री का पहिला प्रहर है. इसका वादी स्वर गंधार और संवादी धैवत है.

सा रे ग प ध सां, सां ध प ग रे सा.

गत (त्रिताल)

दा दा डा दि ड दा दि ड दा दि ड दा डा दा दा डा
रे सा ग ग रे सा ध प ध ध सा रे ग ग ग

दि ड दा दि ड दा डा ॥
रे ग प प ग प ॥ धृ० ॥

दि ड दा डा दा दा डा दि ड दा दि ड दा डा
ग ग प ध प सां सां सां सां ध सां सां रें गं

दा डा दि ड दा दि ड दा डा दा दि ड
रें सां रें रें ध सां सां प ध ग प प

डा ॥
ग ॥ १ ॥

राग भैरव.

इस राग में रिषभ, धैवत, कोमल और बाकी सब शुद्ध स्वर लगते हैं. यह भैरव ठाट का मुख्य राग है. यह राग प्रातःकाल के पहिले प्रहर में बजाया जाता है. इसका वादी स्वर धैवत और संवादी स्वर रिषभ है.

गत (त्रिताल)

दा दि ड दा डा दा डा दि ड दा दि ड दा डा दा दा डा
म प प म ग रे सा सा रे नि सा सा ग म ध प प
दि ड दा दि ड दा डा ॥
प ध ग म म प ध ॥ धृ० ॥
दा दि ड दा डा दा दा डा दि ड दा दि ड दा डा
ग म म प ध ध सों सों सों सों ध नि नि सों रे
दा दा डा दि ड दा दि ड दा डा दा दा डा दि ड
सों ध प गं गं रे सों सों ध सों नि ध प प ध
दा दि ड दा डा
ग म म प ध ॥ १ ॥

तोडे.

१. दा दि ड दा डा दा दि ड दा डा दा दि ड दा डा ॥
नि सा सा ग म प म म ग म प ध ध प म ॥
२. दा दि ड दा डा दा दा डा दि ड दा दि ड दा डा
ग म म प ध नि ध प म प ग म म प ध
दा दि ड दा डा ॥
म प प प ध ॥
३. दा दि ड दा डा दा दि ड दा डा दा दि ड दा डा
रे सों सों नि ध सों नि नि ध प नि ध ध प म
दा दि ड दा डा ॥
ग म म प ध ॥
४. दि ड दा दि ड दा डा दा दा डा दि ड दा दि ड
ग ग म प प ध नि नि सों सों गं गं रे सों सों

दा डा दा दा डा दि ड दा दि ड दा डा दा दि ड ॥
ध सा नि ध प म प ग म म प ध प म म ॥

राग भैरवी.

इस राग में रिषभ, गंधार धैवत, निषाद कोमल और बाकी सब शुद्ध स्वर लगते हैं. यह भैरवी ठाट का मुख्य राग है, यह संपूर्ण रागीनी है यह प्रातःकाल के पहिले प्रहर में बजाई जाती है. यह बहुत मधुर तथा प्यारी रागीनी है. इसका वादी स्वर धैवत और संवादी रिषभ हैं.

गत (त्रिताल)

दा दा डा दि ड दा दि ड दा डा दा दा डा दि ड दा
ग रे सा सा रे नि सा सा ग म ध प प प प प

दि ड दा डा दा दा डा दि ड दा दि ड दा डा दा दि ड
प प ध नि नि ध प प ध म प प ग म ग ध ध

दा डा दा दि ड दा डा ॥
प ध म प प ग म ॥ ध्रु० ॥

दा दि ड दा डा दा दा डा दि ड दा दि ड दा डा
ग म म ध नि ध सा सा सा सा नि नि नि सा ग

दा दा डा दि ड दा दि ड दा डा दा दि ड दा डा
ग रे सा सा रे नि सा सा ध प ग ध ध प ध

दा दि ड दा डा ॥
म प प ग म ॥ १ ॥

तोडे.

१. दा दि ड दा डा दा दा डा दि ड ॥
सा रे रे ग म ग प म म प ॥

२. दा दि ड दा डा दा दा डा दि ड दा दि ड दा डा ॥
सा ग ग म प म ध प नि नि ध प प ग ध ॥

३. दि ड दा दि ड दा डा दा दा डा दि ड दा दि ड
नि नि ध प प ध सा नि ध प ध ध म प प

दा डा दा डा ॥
ग म ध प ॥

४.	दि	ड	दा	दि	ड	दा	डा	दा	दा	डा	दिँ	ड	दा	दि	ड
	ध	ध	म	ध	ध	नि	नि	सां	सां	सां	ग	ग	रे	सां	सां
	१/३	१/३	१/३	१/२	१/२	१/३	१/३	१/३	१/३	१/३	१/२	१/२	१/३	१/३	१/३

दा	डा	दा	दा	डाँ	दि	ड	दा	दि	ड	दा	डा	दा	डा	॥
ध	सां	नि	ध	प	ध	ध	म	प	प	ग	म	नि	ध	॥
१/२	१/२	१/२	१/२	१/३	१/३	१/३	१/३	१/३	१/३	१/२	१/२	१/२	१/२	

शंकर गांधर्व विद्यालय का शिक्षण.

इस विद्यालय में गायन वादन सिखलाया जाता है.

हॉर्मोनियम, तबला, सितार, जलतरंग, दिलरुबा और फिडिल इत्यादि वाद्यों की शिक्षा दी जाती है.

प्रॉयव्हेट ट्यूशन्स का भी प्रबन्ध होता है. आम जल्से या खुशी के मौके पर विद्यार्थियों की पार्टी भेजी जाती है.

विद्यालय की नियमावली मंगाकर आप अवश्य पढ़िये.